Notes

बालक को देश का एक अच्छा नागरिक बनना बालकों को वास्तविक समस्याओं को सुलझाने का अनुभव देना है।

1- स्वास्थ्य शिक्षा एवं शारीरिक प्रशिक्षण
2- कला संगीत एवं प्रयोगात्मक कार्य
3- विज्ञान
4- मानवीय एवं सामाजिक विषय
5- गणित, भाषा

विभिन्न स्तरो पर पाठ्यक्रम परिदृश्य
Curriculam visualized at Different Levels

पाठ्यक्रम बालकों की आवश्यकताओं पर आधारित होना चाहिए। प्रत्येक स्तर के बालकों की आवश्यकताएं भिन्न - भिन्न होती हैं।

प्राथमिक स्तर के भाषा या विषयों के ज्ञान की आवश्यकता बहुत अधिक है। उच्च स्तर उसी क्षेत्र में व्यवहारिक दक्षता की प्रत्येक पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है।

1- प्राथमिक स्तर के लिए पाठ्यक्रम
2. माध्यमिक स्तर के लिए पाठ्यक्रम
3 उच्चस्तर उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए पाठ्यक्रम

Scanned with CamScanner

प्राथमिक स्तर पर पाठ्यक्रम

Notes

Curriculum at Primary stage

प्राथमिक स्तरो पर बालको की आयु 6 से 13 वर्ष तक होती है। इस आयु के बालक की रूचि खेल कूद आदि से सम्बन्धित क्रियाओ से अधिक होती है। इस वर्ग आयु के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाता है। इसे खेल एवं क्रियात्मक कार्य करने के लिए विशेष स्थान दिया जाए प्राइमरी स्तरो के बालकों का पाठ्यक्रम बालक केन्द्रित होना चाहिए।

इस पाठ्यक्रम इन विषयो को स्थान दिया जाता जो हस्तकला, शिल्पकला, मातृभाषा, गणित, सामाजिक विषय, सामान्य ज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, साहित्य संगीत एवं कला आदि।

1- स्वच्छता एवं स्वास्थ्य शिक्षा :- जीवन में आगे बढ़ने के स्वास्थ्य सब कुछ है। जिस व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक नही है वह न तो शारीरिक रूप से कोई कार्य कर पाता है। और मानसिक रूप बड़ा चिंतित रहता है साथ ही साथ यह सत्य है। स्वास्थ्य का संबंध जितना बाल्यावस्था में सम्भव है। उतना किसी दूसरे अवस्था में नही।

2. नैतिकता की शिक्षा :- बालको की आदतें जीवनभर उसका साथ देती है। कभी-2

Notes

उसमें वातावरण के प्रभाव का अन्य किसी कारण से कुछ अप्रांकिनी आदतें भी पड़ जाती हैं। जिनका प्रभाव जीवन भर अच्छा नहीं पड़ता है। यह सत्य नैतिकता बालक को जितनी दी जाय उतनी बड़ी को नहीं

गणित की शिक्षा — शरीर का खुराक मांस आदि भोजन है। ~~मस्तिष्क~~ मस्तिष्क की खुराक कल्पना, विचार और मन्थन अन्य विषयों की अपेक्षा गणित ऐसा विषय है, जिसमें मस्तिष्क को अच्छी खुराक मिल जाती है। बालक बचपन में कुछ न कुछ क्रियाये करते हैं। जैसे उछल कूदना भार वजन उठाना आदि।

सामाजिक विज्ञान की शिक्षा — बालको में स्वभावतः ही नयी बातों ~~की~~ को जानने की उत्सुकता होती है। वह यह जानने का प्रयास करते हैं कि किस बात का परिणाम निकल सकता है। इस बात को ध्यान में रखकर भूगोल, इतिहास नागरिकशास्त्र सामाजिक विषयो से सम्बन्धित प्रक्रियायें करने लगता है।

Notes

विज्ञान की शिक्षा :- पाठ्यक्रम के अनुसार प्राइमरी स्तर के बालको को विज्ञान की शिक्षा देना अटपटा-सा प्रतीत होता हैं। यदि गहराई से विचार किया जाय तो जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नही हैं। जहा विज्ञान न हो।

भाषा की शिक्षा :- शिक्षण का प्रत्येक पहलू स्वयं में कम महत्वपूर्ण नही परन्तु ~~परन्तु~~ प्राथमिक स्तर पर जो भाषा का सबसे अधिक महत्व हैं। क्योंकि बालक जो कुछ सुनता, वही बोलता हैं। जो बोलता वही लिखता हैं। इस स्तर सही बोलना सही लेखन की शिक्षा देना अति आवश्यक है।

कलाओं की शिक्षा :- बालक कला प्रेमी होते हैं। वह प्रत्येक नयी बात आकृति एवं चित्र को पसन्द करते हैं। साथ ही अनुकरण प्रवृत्ति में बहुत अधिक होते हैं। अनुकरण प्रवृत्ति के द्वारा टेढ़े टेढ़े-मेढ़े चित्र भी बनाना चाहते हैं बाकी बना नही पाते क्यों की उनका हाथ सधा नही होता हैं। जैसे चित्रकला, वस्तु कला, मूर्तिकला, आदि।

Notes

उच्च प्राथमिक स्तर पर पाठ्यक्रम
(Curriculum at Middle school Level)

उच्च प्राथमिक कक्षाओं में हमारा तात्पर्य है 6 से 8 तक की कक्षाओं से है। कहीं-कहीं पर इन्हें पूर्व माध्यमिक कक्षाओं के नाम से पुकारा जाता है। यह सर्वमान्य सत्य है कि ज्यों-ज्यों बालक बड़े होते हैं, त्यों-त्यों उसके ज्ञान का क्षेत्र विस्तृत होता है। साथ ही बालकों की आयु बढ़ती है। त्यों-त्यों उसकी रुचि क्षमतायें योग्यताओं में अन्तर आने लगता है।

1- स्वास्थ्य शिक्षा- (Health education)

अच्छा स्वास्थ्य ही सभी प्रकार की सफलताओं का मूल है क्योंकि यह सत्य है, स्वस्थ्य शरीर में स्वास्थ्य मन का निवास होता है, अतः शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए बालकों को किसी न किसी प्रकार शारीरिक व्यायाम करना आवश्यक है।
बालक अपनी क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार के खेल कबड्डी, तैरना नाचना आदि